नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

विश्वविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उदघाटन

वर्धा, 18 मार्च 2016: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के हिंदी अध्ययन का शिक्षण-प्रशिक्षण केंद्र (टी.एल.सी.एच.) के अंतर्गत शिक्षा विद्यापीठ द्वारा 15 एवं 16 मार्च को आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उदघाटन हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला के पूर्व कुलपति तथा आल इंडिया एसोसिएशन ऑफ़ यूनिवर्सिटीज के महासचिव प्रो. फुरकान कमर की अध्यक्षता में किया गया। "कक्षा व पाठयक्रमों से परे अधिगम की संस्कृति" विषय पर संगोष्ठी में प्रो. कमर ने कहा की आज हमारे देश में सामान्य कक्षाओं तथा निर्धारित पाठयक्रमों के अलावा भी छात्र किस प्रकार सीख सकते है और नए नए ज्ञान प्राप्त कर सकते है| कार्यक्रम में विशिष्ठ अतिथि के रूप में बिहार कैडर के पूर्व पुलिस महानिदेशक डॉ डी. एन. गौतम ने कहा कि सभी प्रकार के ज्ञान का स्रोत व्यक्ति 'स्वयं' होता हैं| स्वागत भाषण टी.एल.सी.एच. के निदेशक प्रो. के.के.सिंह ने दिया| शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. अरबिंद कुमार झा ने अतिथियों का परिचय दिया| कार्यक्रम का संचालन ऋषभ कुमार मिश्र ने किया तथा आभार डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर ने माना|

उद्घाटन के बाद विशेष तकनीकी सत्र में हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला के प्रो. ओ.एस.के.एस. शास्त्री ने अधिगम के लिए एक नया नवाचार मॉडल "सत्य साईं विद्या वाहिनी" के बारे में विस्तृत प्रकाश डाला| भोपाल के प्रो. रमेश दवे ने बताया कि विद्यार्थी कक्षा अधिगम से बाहर और किन-किन तरीकों से ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं |

चार समानांतर तकनीकी सत्रों में भारत के विभिन्न क्षेत्रों से पधारे शिक्षाविदों ने शोध पत्र पढ़े। संगोष्ठी में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने मुख्य विषय की प्रासंगिकता पर वक्तव्य देते हुए कहा की अधिगम के क्षेत्र में प्रयास करने से सबकुछ संभव है| इसी प्रयास की कड़ी में इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया है|